

अनुसन्धान एवं प्रक्रिया के रूप में शिक्षा: एक अध्ययन

Dr. Seema Devi*

Assistant Professor Madhav Univeristy, ABU Road, Sirohi, Rajasthan – 307026

सार – मनुष्य की इस संसार में जन्म के साथ ही वातावरण से अनुकूलन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इस प्रक्रिया में मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों तथा प्रकृति प्रदत्त क्षमताओं में विकास होता है। इस प्रक्रिया को ही शिक्षा कहते हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से शिक्षा सीखने-सिखाने, मानव की आन्तरिक शक्तियों को सन्तुलित रूप से बाहर निकालने और बाह्य शक्तियों का सुधार करने की सकारात्मक प्रक्रिया है। प्लेटो एवं अरविन्द जैसे दार्शनिक शिक्षा को उन्मूलन प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। सुविख्यात टी. रेमान्ट की दृष्टि में शिक्षा बालक के भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक परिवेश में विकास की प्रक्रिया है। भारतीय मनीषियों ने शिक्षा को विद्या का पर्याय मानते हुये कहा है:- 'सा विद्या या विमुक्तये' विद्या वही है जो हमें मुक्ति के मार्ग पर ले जाये। इस प्रकार शिक्षा के अर्थ और आयाम विषयक विभिन्न धारणायें हैं। वस्तुतः शिक्षा ही विकास का साधन है। शिक्षा द्वारा न केवल व्यक्ति का वैयक्तिक विकास ही होता है, बल्कि सामाजिक विकास भी शिक्षा के ऊपर निर्भर करता इस प्रकार शिक्षा एक व्यापक बहुआयामी अवधारणा है। जहाँ एक ओर यह अनुभव-आधारित ज्ञान का अक्षय भण्डार है वहीं दूसरी ओर वह एक सकारात्मक प्रक्रिया, सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन तथा सुविकसित सुव्यवस्थित शास्त्र है। इस इकाई में आप समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण के आधार पर शिक्षा को एक प्रक्रिया के रूप में समझने का प्रयास करेंगे साथ ही साथ शिक्षा को एक अनुशासन के रूप में भी जान सकेंगे।

-----X-----

प्रस्तावना

शिक्षा एक प्रक्रिया है। प्रक्रिया का तात्पर्य एक विशेष प्रकार की क्रिया अथवा ऐसी क्रिया से है, जिससे व्यक्ति के भीतर कुछ विशेषताएँ आ जाये। व्यक्ति के भीतर नैसर्गिक रूप से कुछ शक्तियाँ होती हैं। ये शक्तियाँ उसे जन्म से प्राप्त होती हैं इसके अलावा बाह्य प्रकृति से भी कुछ शक्तियाँ-(भौतिक एवं सामाजिक) उसे प्राप्त होती हैं। इन्हीं दोनों शक्तियों की प्रतिक्रिया-स्वरूप व्यक्ति आगे बढ़ता है। इसी प्रक्रिया को हम शिक्षा की प्रक्रिया कह सकते हैं। परिभाषा तौर पर कहा जा सकता है कि शिक्षा व्यक्ति की नैसर्गिक शक्तियों एवं भौतिक और सामाजिक शक्तियों के बीच होने वाली विशेष क्रिया है जो आनुवांशिकता व पर्यावरण की शक्तियों के बीच होती है, जिससे व्यक्ति ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करके सफल होता है। अतः ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करने की प्रक्रिया को ही शिक्षा कहते हैं। ऐसी प्रक्रिया की कुछ विशेषताएँ हैं, जो निम्न प्रकार हैं -

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया

इयूवी के विचार में शिक्षा और जीवन एक है। तात्पर्य यह है कि प्राणी जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कुछ-न-कुछ सीखता ही रहता है। इसके फलस्वरूप वह कुछ नये अनुभव, नित्य ग्रहण करता

रहता है और नये अनुभव न भी ग्रहण करे, तो भी पुराने अनुभवों में सुधार एवं परिष्कार करता रहता है, जिससे जीवन की परिस्थितियों में वह अधिक सफलता प्राप्त कर सके। इस प्रकार वह शिक्षा प्राप्त करता रहता है, जो समस्त जीवन में चलती रहती है। एडलर का कहना है कि शिक्षा मनुष्य के शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विकसित, स्वतंत्र और सचेतन मानव की ईश्वर के प्रति उत्कृष्ट अनुकूलन की निरन्तर प्रक्रिया है, जो मनुष्य के बौद्धिक, भावात्मक एवं इच्छा शक्ति से सम्बन्धित वातावरण में अभिव्यक्त होती है। सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्धित क्रिया है, यह केवल छोटे बालकों से ही सम्बन्धित नहीं होती। यह तो जन्म से आरम्भ होती है और मृत्यु तक चलती रहती है।

शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक शक्तियों का विकास वातावरण और परिस्थितियों के अनुसार होता है। हार्न के अनुसार:- "शिक्षा अन्दर से विकास होने को कहते हैं न कि बाहर से संचय को, वह तो स्वाभाविक मूलप्रवृत्तियों और रुचियों की क्रिया से होती है न कि बाह्य शक्तियों के प्रति अनुक्रिया स्वरूप।

शिक्षा एक संश्लिष्ट प्रक्रिया

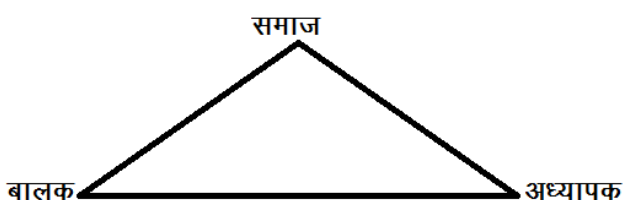
द्वय आधुनिक विचारकों के अनुसार शिक्षा के द्वारा सभी पक्षों का समग्र विकास होता है न कि अलग-अलग। शिक्षा एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है, जो शरीर, मन, संवेग और की समरूप वृद्धि का लक्ष्य रखती है। इसलिए एक उचित शिक्षा योजना में एक साथ और अन्तराव लम्बित वृद्धि के चारों पक्षों को होना चाहिए, तथ्यतः ये सब एक प्रणाली में ऐसे संश्लिष्ट होकर मिले हैं, जो एक-दूसरे से उपेक्षित या अलग नहीं किये जा सकते। स्पष्टतः एक मनुष्य प्राणी के रूप में शरीर, मन, आत्मा, संवेगों एवं भावों का ऐसा मिश्रण है, जिसमें से किसी एक को दूसरे से अलग करना असम्भव है। अतः शिक्षा मनुष्य के वृद्धि एवं विकास की प्रक्रिया होने के नाते एक संश्लिष्ट प्रक्रिया होगी, यह पूर्णतया सत्य है।

शिक्षा एक विधुवीय प्रक्रिया

जॉन एडम्स का विचार है कि शिक्षा के दो ध्रुव होते हैं:- एक ओर विद्यार्थी तथा एक ओर शिक्षक द्य इस प्रक्रिया में विद्यार्थी सीखने वाला तथा शिक्षक सिखाने वाला होता है तथा दोनों ही इस प्रक्रिया में भाग लेते हैं। जॉन ड्यूवी ने भी शिक्षा के दो ध्रुव माने हैं एक मनोवैज्ञानिक तथा दूसरा सामाजिक। मनोवैज्ञानिक अंग से उनका तात्पर्य सीखने वाले की रुचि, रुझान और शक्ति से है और सामाजिक अंग से उनका तात्पर्य सामाजिक पर्यावरण से है। रॉस का भी मत है कि शिक्षा में चुम्बक के समान दो ध्रुवों का होना आवश्यक है इसीलिए यह द्विध्रुवीय प्रक्रिया है।

शिक्षा एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया

जॉन ड्यूवी शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया बताते हुये इस प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक पक्ष को स्वीकारते हैं तथा वह समाज से अलग शिक्षा प्रक्रिया की कल्पना नहीं कर सकते। उनके मतानुसार इसमें तीन घटक काम करते हैं:- बालक, अध्यापक एवं सामाजिक शक्तियाँ। जॉन ड्यूवी के शब्दों में, -प्रजाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने से सभी तरह की शिक्षा प्राप्त होती है।



शिक्षा की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में तीन ध्रुव होते हैं इसे निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है: बालक को किन विषयों को पढ़ना है, उसे कौन-कौन से कौशल सिखाने हैं, किस प्रकार के विचार एवं अनुभव उसे प्रदान करने हैं:- इन सब का निर्णय समाज करता है। इस दृष्टि से पाठ्यचर्या की रचना करते समय समाज की

आवश्यकताओं और माँगों को ध्यान में रखा जाता है, इसलिए कुछ शिक्षाविद शिक्षा की इस त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में बालक, अध्यापक एवं पाठ्यचर्या को तीन ध्रुव पर रखते हैं। उनके मतानुसार, पाठ्यचर्या बालक और अध्यापक को एक-दूसरे के सम्पर्क में लाने का कार्य करती है इसे निम्न प्रकार से दर्शाया जा सकता है

शिक्षा एक सचेतन एवं सप्रयोजन प्रक्रिया

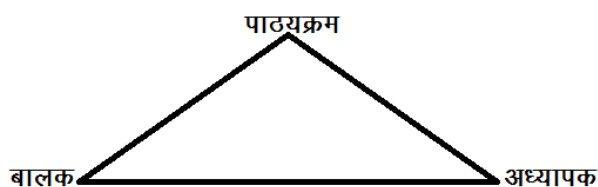
शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया उद्देश्य पूर्ण होती है। बासिंग के अनुसार- “शिक्षा का कार्य व्यक्ति को उसके वातावरण से इस उद्देश्य से समायोजित करना है, जिससे कि व्यक्ति तथा समाज दोनों को अत्यधिक और दीर्घकालीन संतुष्टि प्राप्त हो सके। जिसमें व्यक्ति एवं समाज दोनों का ध्यान रखा जायेगा, तो अवश्य ही शिक्षा सचेतन एवं सप्रयोजन होगी। ब्राउन के अनुसार:- शिक्षा सचेतन रूप में नियंत्रित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाये जाते हैं और व्यक्ति के द्वारा समाज में परिवर्तन लाये जाते हैं। सामाजिक मनोवैज्ञानिक अंग से उनका तात्पर्य सीखने वाले की रुचि, रुझान और शक्ति से है और सामाजिक अंग से उनका तात्पर्य सामाजिक पर्यावरण से है। रॉस का भी मत है कि शिक्षा में चुम्बक के समान दो ध्रुवों का होना आवश्यक है इसीलिए यह द्विध्रुवीय प्रक्रिया है।

शिक्षा एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया

जॉन ड्यूवी शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया बताते हुये इस प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक पक्ष को स्वीकारते हैं तथा वह समाज से अलग शिक्षा प्रक्रिया की कल्पना नहीं कर सकते। उनके मतानुसार इसमें तीन घटक काम करते हैं:- बालक, अध्यापक एवं सामाजिक शक्तियाँ। जॉन ड्यूवी के शब्दों में, -प्रजाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने से सभी तरह की शिक्षा प्राप्त होती है।

शिक्षा की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में तीन ध्रुव होते हैं इसे निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है: बालक को किन विषयों को पढ़ना है, उसे कौन-कौन से कौशल सिखाने हैं, किस प्रकार के विचार एवं अनुभव उसे प्रदान करने हैं:- इन सब का निर्णय समाज करता है। इस दृष्टि से पाठ्यचर्या की रचना करते समय समाज की आवश्यकताओं और माँगों को ध्यान में रखा जाता है, इसलिए कुछ शिक्षाविद शिक्षा की इस त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में बालक, अध्यापक एवं पाठ्यचर्या को तीन ध्रुव पर रखते हैं। उनके मतानुसार, पाठ्यचर्या बालक और अध्यापक को एक-

दूसरे के सम्पर्क में लाने का कार्य करती है इसे निम्न प्रकार से दर्शाया जा सकता है।



शिक्षा एक सचेतन एवं संप्रयोजन प्रक्रिया

शिक्षा की सम्पूर्ण प्रक्रिया उद्देश्य पूर्ण होती है। बासिंग के अनुसार- “शिक्षा का कार्य व्यक्ति को उसके वातावरण से इस उद्देश्य से समायोजित करना है, जिससे कि व्यक्ति तथा समाज दोनों को अत्यधिक और दीर्घकालीन संतुष्टि प्राप्त हो सके। जिसमें व्यक्ति एवं समाज दोनों का ध्यान रखा जायेगा, तो अवश्य ही शिक्षा सचेतन एवं संप्रयोजन होगी। ब्राउन के अनुसार:- शिक्षा सचेतन रूप में नियंत्रित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाये जाते हैं और व्यक्ति के द्वारा समाज में परिवर्तन लाये जाते हैं।

जॉन ऐडम्स के मतानुसार- “शिक्षा एक सचेतन एवं विचार पूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्तित्व दूसरे पर इसलिए प्रभाव डालता है कि दूसरे का विकास और परिवर्तन हो सके। इस विकास व परिवर्तन से व्यक्ति व समाज दोनों को लाभ होता है तथा इस प्रकार के लाभ को व्यक्ति और समाज ध्यान में रखते हैं व इसके प्रति सचेत रहते हैं।

शिक्षा गतिशील प्रक्रिया

शिक्षा के द्वारा मनुष्य अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरन्तर विकास करता है तथा इस विकास के लिए उसकी एक पीढ़ी अपने ज्ञान एवं कला-कौशल आदि को दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है। तथा इस प्रक्रिया के लिए प्रत्येक समाज विद्यालयी शिक्षा की व्यवस्था करता है इसीलिए समय विशेष की विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ आदि सब निश्चित होते हैं। तथा समाज में जैसे-जैसे परिवर्तन होते हैं, उसी प्रकार शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या तथा शिक्षण विधियाँ आदि में आवश्यकतानुसार परिवर्तन होता रहता है। यही शिक्षा की गतिशीलता है। बी.एन.झा के अनुसार- “शिक्षा एक प्रक्रिया है और एक सामाजिक कार्य है जो कोई समाज अपने हित के लिए करता है। शिक्षा केवल जीवन की तैयारी मात्र नहीं है, - “शिक्षा स्वयं ही जीवन है, जीवन का अर्थ विकास से है। विकास से गतिशीलता की भावना प्रकट होती है। अतः शिक्षा स्वयं ही गतिशील होती है। अन्यथा व्यक्ति तथा समाज भी प्रगति नहीं कर सकते।

शिक्षा की गतिशीलता टी.रेमान्ट के शब्दों से भी स्पष्ट होती है: “शिक्षा विकास का वह प्रक्रम है, जिसमें व्यक्ति के शैशव से प्रौढ़ता तक की वह प्रक्रिया निहित है, जिसके द्वारा वह अपने को धीरे-धीरे विभिन्न विधियों से अपने भौतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक वातावरण के अनुकूल बनाता है।

शिक्षा समाजीकरण की प्रक्रिया

समाजीकरण से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा बालक की प्राकृतिक क्षमताओं का निरन्तर विकास होता है तथा उसे सामाजिक जीवन के विविध आयामों से अवगत कराया जाता है। हैविग हर्ट एवं न्यू गार्टन के अनुसार- “समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक अपने समाज की स्वीकृत विधाओं को सीखते हैं तथा इन विधाओं (तौर-तरीकों) को अपने व्यक्तित्व का अंग बना लेते हैं।

शिक्षा बालक-बालिकाओं के विकास में सहायक होती है वस्तुतः यह समाजीकरण की सशक्त प्रक्रिया है। समाज के अभाव में हम न तो भाषा सीख सकते हैं और न विचार करना। शिक्षा की औपचारिक तथा अनौपचारिक विधायें और घटक समाजीकरण की प्रक्रिया में अपना योगदान देते हैं। किंबल यंग के अनुसार समाजीकरण के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं: - 01. परिवार, 02. क्रीड़ा-समूह, 03. पड़ोस, 04. जाति और वर्ग, 05. विद्यालय तथा अन्य, 06. प्रासंगिक समूह आदि।

अन्त में हम कह सकते हैं कि शिक्षा आजीवन चलने वाली एक ऐसी विचारपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि विकास सभ्यक रीति से होता है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन और परिवर्द्धन लाता है, जिससे व्यक्ति, जाति, समाज और राष्ट्र तथा विश्व सभी का हित होता है।

उद्देश्य

शिक्षा को एक प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट कर सकेंगे। इ. शिक्षा में सन्निहित विभिन्न प्रक्रियाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित कर सकेंगे। ब. शिक्षा को एक अनुशासन के रूप में समझ सकेंगे। क. शिक्षा के उद्देश्यों के प्रकाश में, एक अनुशासन के रूप में बता पाने में सक्षम हो सकेंगे।

शिक्षा एक अनुशासन

मानव ने सदैव ही अपने अनुभवों को विभिन्न विषयों में बद्ध किया। इस प्रकार विज्ञान, दर्शन, कला और अन्य विषय बने।

इन सबका अध्ययन 'शिक्षा' कहलाया। आधुनिक युग में शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विधियाँ, मूल्यांकन एवं कार्यों इत्यादि की विस्तृत व्याख्या करने व उसकी समस्याओं के समाधान खोजने के लिए एक नया प्रयत्न शुरू हुआ, इस नये प्रयत्न ने नये अनुशासन को जन्म दिया जिसे शिक्षाशास्त्र कहते हैं। पहले यह सब कार्य दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र द्वारा होता था परन्तु आज यह एक स्वतन्त्र विषय के रूप में जाना जाता है। शिक्षाशास्त्र में उन सब विचारों एवं प्रयोगों का वर्णन होता है। जिन्होंने समय-समय पर शिक्षा को प्रभावित किया।

शब्दिक अर्थ के आधार पर

शिक्षाशास्त्र के शब्दिक अर्थ को देखा जाये तो स्पष्ट है कि शिक्षाशास्त्र दो शब्दों के योग से बना है शिक्षा और शास्त्र। शिक्षा का अर्थ बालक की अंतर्निहित शक्तियों को आगे बढ़ाना है चूंकि आगे बढ़ने की प्रक्रिया सीखने के द्वारा ही सम्भव है अतः शिक्षा को सीखने की प्रक्रिया कहा जा सकता है। शास्त्र का तात्पर्य विज्ञान से है क्योंकि शास्त्र विज्ञान का समानार्थी शब्द है और विज्ञान का अर्थ है किसी विषय या वस्तु का नियमबद्ध या क्रमबद्ध अध्ययन करना शास्त्र कहलाता है। शास्त्र शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'शासश्' धातु से हुई जिसका अर्थ है। शासन करना या नियंत्रण करना या नियमबद्ध करना। इस प्रकार शिक्षाशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसमें सीखने एवं सिखाने से सम्बन्धित बातों का व्यवस्थित रूप से नियमपूर्वक अध्ययन किया जाता है। साथ ही इसमें शिक्षा की प्रक्रिया, स्वरूप, अंगों एवं समस्याओं का दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, वैज्ञानिक, आर्थिक तथा राजनैतिक दृष्टिकोणों से अध्ययन किया जाता है।

शिक्षाशास्त्र के अध्ययन के उद्देश्य के आधार पर शिक्षाशास्त्र के निम्नांकित उद्देश्य परिलक्षित होते हैं

1. मानव प्रकृति, रचना, तत्सम्बन्धी वृद्धि एवं विकास की ओर इनसे सम्बन्धित सभी समस्याओं को समझना तथा उपयुक्त उपागमों का पता लगाना, उन्हें प्रयोग करना, जिससे कि समस्याओं का समाधान हो और अच्छे ढंग का समायोजन हो।।
2. मानव के आत्म को जानना तथा उसे अपनी विभिन्न शक्तियों को जानने-पहचानने और विभिन्न प्रकार की क्रियाशीलताओं में प्रयोग करने में सहायता करना।

3. मानव को अन्य मानवों के साथ रहते हुए सभी सम्बन्धों को सार्थक ढंग से समझने में सहायता देना। और समूह निर्माण के लिए तैयार करना।
4. व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों को जानकर उचित रूप से सम्बन्धों का परिचालन करना तथा उन सम्बन्धों के आधार पर अनुकूल व्यवहार करने की क्षमता प्राप्त करना।
5. समाज के सम्बन्धों की प्रकृति, सामाजिक संरचना और उसके संगठन को समझना, जिससे कि समाज के सदस्यों में सामंजस्य और समरसता की वृद्धि हो।
6. मानव को उसके समूह की संस्कृति से तथा उसे प्राप्त करने, ग्रहण और धारण करने, भूत और वर्तमान काल में उसके अनुकूल जीवन यापन करने में तथा भविष्य में दूसरे के लिए विरासत रूप में छोड़ने में किये गए प्रयत्नों से परिचित कराना।
7. प्रगतिवान समय और युग की माँग के अनुसार आवश्यक मानवीय मूल्यों, सद्गुणों विशेषताओं आदि को समझना, परखना, निर्धारित करना तथा स्थापित करने में प्रयत्नशील होना।

भूत और वर्तमान काल में विभिन्न देशों की शैक्षिक प्रणालियों तथा ऐतिहासिक दृष्टि से होने वाली शैक्षिक प्रगति के विकास को जानना तथा जनसाधारण और युग की माँगों को पूरा करना, इसे करने के लिए उत्तम परिणामों के हेतु, सुधार एवं संशोधन के लिए प्रयत्न करना। उपर्युक्त उद्देश्यों को उन परिप्रेक्ष्यों के साथ बताया गया है, जिसकी ओर शिक्षाशास्त्र की परिभाषा में संकेत किया जाता है। इस विचार से शिक्षाशास्त्र के अंतर्गत हम बालक के जैविक, शारीरिक, बौद्धिक तथा शैक्षिक विकास का अध्ययन करते हैं। वस्तुतः यह समाजीकरण की सशक्त प्रक्रिया है। समाज के अभाव में हम न तो भाषा सीख सकते हैं और न विचार कर सकते हैं। शिक्षा की औपचारिक तथा अनौपचारिक विधायें और घटक समाजीकरण की प्रक्रिया में अपना योगदान देते हैं। किंबल यंग के अनुसार समाजीकरण के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं- 01 परिवार, 02 क्रीडा-समूह, 03 पड़ोस, 04 जाति और वर्ग, 05 विद्यालय तथा अन्य, 06 प्रासंगिक समूह आदि।।

अन्त में हम कह सकते हैं कि शिक्षा आजीवन चलने वाली एक ऐसी विचारपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि विकास सभ्यक रीति से होता है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति

अपने व्यवहार में परिवर्तन और परिवर्द्धन लाता है, जिससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तथा विश्व सभी का हित होता है।

सारांश

शिक्षा, सीखने-सिखाने, मानव की आंतरिक शक्तियों को संतुलित रूप से बाहर निकालने और बाह्य शक्तियों का सुधार करने की सकारात्मक प्रक्रिया है। शिक्षा की द्वि ध्रुवीय प्रक्रिया में विद्यार्थी एवं शिक्षक सम्मिलित हैं वहीं जॉन ड्यूवी के शब्दों में शिक्षा को त्रिध्रुवीय प्रक्रिया मानते हुए तीसरे ध्रुव के रूप में समाज को स्वीकारते कुछ शिक्षाविदों के अनुसार शिक्षा की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में बालक, अध्यापक एवं पाठ्यचर्या को तीन ध्रुवों पर रखते हैं। शिक्षा को एक समाजीकरण की प्रक्रिया मानते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि इसके द्वारा बालक की प्राकृतिक क्षमताओं का सम्यक विकास होता है तथा उसे सामाजिक जीवन के विविध आयामों से अवगत कराया जाता है। आधुनिक युग में शिक्षा प्रक्रिया के स्वरूप, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विधियाँ, मूल्यांकन एवं कार्यों इत्यादि की विस्तृत व्याख्या करने व उसकी समस्याओं के समाधान खोजने के लिए एक नया प्रयत्न शुरू हुआ, इस नये प्रयत्न ने नये अनुशासन को जन्म दिया जिसे शिक्षाशास्त्र कहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चक्रवर्ती, ए. के. प्रिंसीपल एण्ड प्रैक्टिस ऑफ एजुकेशन- आर. लाल बुक डिपोमेरठ।
2. पाल, गुप्त (डॉ.) एवं मदन मोहन शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार,- न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद
3. त्यागी एवं पाठक, शिक्षा के सिद्धांत, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
4. चैबे, एस. पी. (डॉ) एवं अखिलेश चैबे, फिलोसोफिकल एण्ड सोशोलॉजिकल फाउण्डेशन्स ऑफ एजुकेशन- विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

Corresponding Author

Dr. Seema Devi*

Assistant Professor Madhav Univeristy, ABU Road,
Sirohi, Rajasthan – 307026